तीव्र पुरुषार्थ - 23

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ तीनों कर्तव्य इक्कठे साथ-साथ चाहिए। ऐसे नहीं - स्थापना का कर्तव्य करने का समय अलग है, विनाश के कर्तव्य का समय और आना है। नहीं। नई रचना रचते जाओ, और पुराने का विनाश करते जाओ। आसुरी संस्कार वा जो भी कमजोरी है, उनका विनाश भी साथ-साथ करते जाना है। **नये संस्कार ला रहे हैं, पुराने संस्कार खत्म कर रहे हैं। कईयों में रचना रचने का गुण होता है लेकिन शक्ति रुप विनाश कार्य रुप न होने कारण सफलता नहीं हो पाती। इसलिये दोनों साथ-साथ चाहिए।**

(12/03/1972)

➢➢ किन 7 बातों का विनाश करना है ?

➳ _ ➳ विकार

→ कोई भी विकार अकेले नहीं आता... उसके साथ उसके बहुत से अंश और वंश आते हैं

➳ _ ➳ विकल्प

→ अशुद्ध ख़याल

➳ _ ➳ विकर्म

➳ _ ➳ व्यर्थ

→ समर्थ विचार डालते जाओ... व्यर्थ विचार स्वतः ही विनाश होते जायेंगे

- Creation में ही अदृश्य Destruction समाई हुई है
- रौशनी लाकर ही अन्धकार मिटाया जा सकता है

➳ _ ➳ वेस्ट / नेगेटिव

➳ _ ➳ अवगुण

→ अवगुण धारण करने की विधि

- परचिन्तन
- एक दुसरे के अवगुण देखना और दूसरों को बताना

➳ _ ➳ कमी / कमजोरी

→ सबसे पहल तो accept कीजिये की मेरे अन्दर यह कमजोरी है

→ पुरुषार्थ में थोड़ी सी सफलता से संतुष्ट नहीं हो जाना है

- पुरुषार्थ के मार्ग में संतुष्टता तो शत्रु है
- There Should Be Divine Discontent (दैवी असंतोष)

➳ _ ➳ संस्कार / आदतें

→ Take Your Habbits As Your Addiction

- वही सब कुछ करो... जो एक Alcholic दारु छोड़ने के लिए करता है

→ जिसे छोड़ना है.. उसके प्रति घृणा उत्पन्न कीजिये